Class: B.A. Part-I (Hons. P-I + Sub.)
Lecture No. 15.
Date: 13.08.2020
Topic: Unit-IVth (iii) हर्षवर्द्धन
From Page no. 1—2.

[Continue ...]

सेना

ह्वेनसांग बताता है कि हर्ष की सेना में 60,000 हाथी तथा एक लाख घोड़े थे। पैदल सैनिकों की संख्या काफी बड़ी रही होगी। हर्षवर्द्धन के पास एक विशाल और संगठित सेना थी। स्पष्टतः यह सेना सामन्तों तथा अधीन राजाओं द्वारा एकत्रित की गयी थी। घुड़सेना के लिए घोड़े सिन्धु, ईरान और कम्बोज से प्राप्त किये जाते थे। साधारण सैनिकों को 'चाट' और 'भाट' कहा जाता था। वे वैतनिक तथा अवैतनिक दोनों होते थे। घुड़सेना के अधिकारियों को 'बृहदाश्ववार' कहा जाता था। पैदल सेना के अधिकारियों को 'बलाधिकृत' और 'महाबलाधिकृत' कहा जाता था। प्रमुख सैन्याधिकारी को 'महासेनापति' अथवा 'महाबलाधिकृत' कहा जाता था। सेना के सामग्रियों को सुरक्षित रखने के लिए एक अलग विभाग होता था जिसे 'रणभाण्डागाराधिकरण' कहते थे। इस विभाग का प्रधान रणभाण्डागारिक होता था। कभी-कभी सैनिकों के व्यवहार से जनता को महान कष्ट उठाना पड़ता था। अभियानों के अवसर पर वे खड़ी फसलों को नष्ट कर देते तथा मार्ग में पड़ने वाले घरों एवं झोंपड़ियों को जला देते थे। सम्राट भी इस कठिनाई की ओर बहुत कम ध्यान दिया करता था।

इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि यद्यपि हर्ष ने गुप्तों की शासन प्रणाली का अनुकरण किया तथापि उसमें वह गुप्तशासन के समान उदारता, सुरक्षा तथा लोकोपकारिता नहीं स्थापित कर सका। उसका प्रशासन मौर्यों के समान सुसंगठित भी नहीं था। प्रशासन पर सामन्तों के बढ़ते प्रभाव के कारण सम्राट की शक्ति का क्रमिक ह्रास प्रारम्भ हो गया था तथा विकेंद्रीकरण की प्रवृत्ति प्रबल हो रही थी।

धार्मिक जीवन

हर्ष का धर्म :–

व्यक्तिगत धर्म के विषय में हर्ष के राजवंश के सदस्य अपने-अपने धार्मिक विचारों का अनुसरण करते थे। प्रभाकरवर्द्धन सूर्य का उपासक था। कहा गया है कि वह प्रतिदिन सूर्य को "लाल कमल के फूलों का एक गुच्छा अर्पित करता था जो लाल मणि के एक ही बर्तन में सजा होता था और यह बर्तन भी उसके हृदय की तरह उसी रंग का था।" राज्यवर्द्धन बौद्ध था। स्वयं हर्षवर्द्धन ने वंश के तीन देवताओं– शिव, सूर्य और बुद्ध को श्रद्धांजलि अर्पित की। उसने उन तीनों देवताओं की सेवा के लिए कीमती मन्दिर बनवाये, किन्तु अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में वह महायान बौद्ध बन गया था। स्पष्टतः यह ह्वेनसांग के प्रभाव का ही परिणाम था।

बताया गया है कि विभिन्न धर्मों के विद्वानों की चर्चा

[Conti...]

सुनने का हर्ष को बहुत चाव था। ह्वेनसांग द्वारा महायान की व्याख्या से वह बहुत प्रभावित हुआ था।

कन्नौज की सभा :-

643 ई० में हर्ष ने कन्नौज में एक सभा का आयोजन किया। सभा का उद्देश्य देश में बौद्ध धर्म को विकसित करने के लिए ह्वेनसांग की उपस्थिति का लाभ उठाना था। बहुत से शासक इस सभा में सम्मिलित हुए। उसमें 3000 महायान तथा हीनयान बौद्ध भिक्षु, 3000 ब्राह्मण और निर्ग्रन्थ तथा नालन्दा विश्वविद्यालय के लगभग 1000 बौद्ध विद्वान भाग लेने के लिए आये। हर्ष ने ह्वेनसांग का नाम सभापति पद के लिए प्रस्तावित किया और महायान सम्बन्धी एक विषय को वाद-विवाद के लिए निर्धारित कर दिया। यह सभा 23 दिन तक चली और इसमें महायान का एकपक्षी प्रचार किया गया। इस सभा में ह्वेनसांग को 'महायान देव' व 'मोक्षदेव' उपाधि से विभूषित किया गया।

बताया गया है कि गंगा के तट पर स्थित विशाल विहार को इसी अवसर के लिए बनवाया गया था। राजा के बराबर बुद्ध की एक सोने की मूर्ति एक सौ फुट ऊँचे स्तम्भ पर रख दी गयी। उसी प्रकार की किन्तु उससे छोटी तीन फुट ऊँची मूर्ति को रोज जुलूस में उठाया जाता था, जिसमें 20 राजा और 300 हाथी होते थे। छत्र को स्वयं हर्ष उठाता था और वह शुक्र देवता के रूप में उपस्थित होता था।

[Continue........]

Date : 13.08.2020.

Ajanta Officer